International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

"मध्यप्रदेश के शैलोत्कीर्ण मंदिरो की स्थापत्यकला का संरचनात्मक एवं तुलनात्मक परिशीलन"

डॉ. उषा अग्रवाल
विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक (इतिहास)
प्रधानमन्त्री उत्कृष्ट महाविद्यालय, मंदसौर,म.प्र

जितेंद्र गवरिया
शोधार्थी, इतिहास
सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन, म.प्र

सारांश

भारतीय मंदिर स्थापत्य कला में शैलोत्कीर्ण मंदिर शैली प्राचीन शिल्पकारों की तकनीकी दक्षता और रचनात्मक कौशल के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन्हें एक ही एकाश्म शिला को उत्कीर्ण कर निर्मित किया जाता हैं। इस शोध पत्र में मध्य प्रदेश के प्रमुख शैलोत्कीर्ण मंदिर—धर्मराजेश्वर (मंदसौर), वासवी मंदिर (धार) तथा चतुर्भुज मंदिर (ग्वालियर) का स्थापत्य दृष्टि से अध्ययन किया गया है। जिसमें धर्मराजेश्वर मंदिर विकसित नागर शैली तथा शैव-वैष्णव परंपरा के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है। वासवी मंदिर, की समचतुरश्र योजना तथा पिरामिडाकार फमसाना संरचना दक्कन की स्थापत्य परंपरा का प्रभाव दर्शाती है। वहीं चतुर्भुज मंदिर प्रतिहार कालीन स्थापत्य का महत्वपूर्ण उदाहरण है, जिसमें भगवान विष्णु से संबंधित समृद्ध प्रतिमा-अलंकरण अंकित हैं। इन मंदिरों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मध्य प्रदेश की शैलोत्कीर्ण वास्तुकला में स्थानीय परंपराओं के साथ नागर शैली एवं दक्कन की परंपराओं का समन्वय हुआ है। साथ ही, शिला की प्रकृति, उत्कीर्णन तकनीक एवं संरचनात्मक विन्यास ने इनके स्वरूप को प्रभावित किया है। शोध पत्र में उपर्युक्त मंदिरों की वास्तु योजना, संरचनात्मक विन्यास, शिल्प अलंकरण तथा निर्माण तकनीक का विश्लेषण किया गया है। साथ ही अध्ययन हेतु प्रत्यक्ष अवलोकन, क्षेत्रीय सर्वेक्षण तथा उपलब्ध साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक स्रोतों का उपयोग किया गया है। निष्कर्षतः, ये मंदिर स्थापत्य, संस्कृति, धर्म तथा प्राचीन स्थापत्य कौशल के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

कूट शब्द: शैलोत्कीर्ण मंदिर, मध्य प्रदेश, मंदिर वास्तुकला, नागर शैली, राष्ट्रकूट शैली, धर्मराजेश्वर मंदिर, चतुर्भुज मंदिर, वासवी मंदिर।

1.प्रस्तावना-

भारत में मंदिर स्थापत्य कला की परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है, जिसमें समय-समय पर विभिन्न शैलियों का विकास हुआ हैं। जिसमें शैलोत्कीर्ण मंदिर कला का विशेष महत्व है। शैलोत्कीर्ण मंदिर वे संरचनाएँ हैं, जिन्हें किसी एक ही विशाल शिला को

उत्कीर्ण कर निर्मित किया जाता है। इस शैली में शिला को काटकर मंदिर का रूप प्रदान किया जाता है, जो इसे अन्य स्थापत्य शैलियों से अलग बनाता है।

पल्लव शासक नरसिंहवर्मन प्रथम द्वारा निर्मित महाबलीपुरम के रथ मंदिर शैलोत्कीर्ण मंदिर स्थापत्य कला के प्रारम्भिक उदाहरण हैं। वहीं इस शैली का उत्कर्ष हमें महाराष्ट्र के एलोरा स्थित कैलासनाथ मंदिर में देखने को मिलता है, यह विश्व की प्रमुख शैलोत्कीर्ण स्थापत्य कृतियों में गिना जाता है। इसी परिसर में जैन धर्म से संबंधित 'छोटा कैलाश' मंदिर भी स्थित है, जो इस शैली की विविधता को दर्शाता है।

इसके अतिरिक्त तमिलनाडु में स्थित कालुगुमलाई का मंदिर, हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले का मसरूर मंदिर, बिहार के कहलगाँव का रथाकार शिखरयुक्त मंदिर तथा उत्तराखण्ड के थाल में स्थित एक हथिया देवल मंदिर अन्य शैलोत्कीर्ण मंदिर के उदाहरण हैं।

मध्य प्रदेश में भी शैलोत्कीर्ण मंदिरों की उल्लेखनीय परंपरा विद्यमान है। जिसमें मंदसौर का धर्मराजेश्वर मंदिर, ग्वालियर का चतुर्भुज मंदिर तथा धार का वासवी मंदिर इसी शैली में निर्मित है। प्रस्तुत शोध-पत्र में मध्य प्रदेश के उपर्युक्त मंदिरों की स्थापत्य योजना तथा कला का अध्ययन किया गया है।

2.साहित्य समीक्षा-

मध्य प्रदेश के शैलोत्कीर्ण मंदिरों के अध्ययन में कई विद्वानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दयालन डी. (1995) तथा शांतिलाल नागर (1992) ने भारतीय और मध्य प्रदेश के एकाश्म मंदिरों की वास्तु योजना, निर्माण तकनीक और कलात्मक विशेषताओं का अध्ययन प्रस्तुत किया है। एलेक्जेंडर कनिंघम की आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया रिपोर्ट (1864–65) मध्य भारत के प्राचीन स्मारकों के प्रारंभिक पुरातात्त्विक विवरण प्रदान करती है। मालवा और मंदसौर क्षेत्र के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन में कैलाश चंद्र पाण्डेय (2022), चंद्रभूषण त्रिवेदी (2009) तथा रितेश लॉट (2019) के कार्य महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त गोपाल भार्गव (2011), अमर सिंह (1996) तथा पिंकी मदुरिया (2021) ने ग्वालियर की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर उपयोगी अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। इन अध्ययनों से शैलोत्कीर्ण मंदिरों की ऐतिहासिक एवं स्थापत्य विशेषताओं की जानकारी मिलती है। उपरोक्त साहित्य का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि इन संरचनाओं के तुलनात्मक तकनीकी मूल्यांकन की दिशा में अभी और शोध की आवश्यकता है।

3.शोध के उद्देश्य-

- मध्य प्रदेश में स्थित शैलोत्कीर्ण मंदिरों के स्थापत्य स्वरूप और उनकी विशेषताओं का अध्ययन करना।
- इन मंदिरों की निर्माण तकनीक, चट्टान की प्रकृति के प्रभाव का अध्ययन करना।

- मध्य प्रदेश में स्थित शैलोत्कीर्ण मंदिरों का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

4.शोध प्रविधि-

प्रस्तुत शोध कार्य की विषय-वस्तु के विश्लेषण हेतु गुणात्मक तथा 'तुलनात्मक' दृष्टिकोण अपनाया गया है। शोध की प्रामाणिकता बनाए रखने के लिए सूचनाओं का एकत्रीकरण प्राथमिक एवं द्वितीयक, दोनों स्रोतों के समन्वय से किया गया है।

4.1 प्राथमिक साक्ष्य (Primary Sources):

- **क्षेत्रीय अन्वेषण एवं निरीक्षण:** शोधार्थी ने स्वयं मंदसौर, धार और ग्वालियर के शैलोत्कीर्ण स्थलों का भ्रमण किया। इस दौरान **'प्रत्यक्ष अवलोकन विधि'** का प्रयोग कर मंदिरों की सूक्ष्म वास्तुकला, निर्माण तकनीक और वर्तमान स्थिति का गहन परीक्षण किया गया।

4.2 द्वितीयक साक्ष्य (Secondary Sources):

- **साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक संदर्भ:** तथ्यों की पुष्टि के लिए ए.एस.आई. (ASI) की ऐतिहासिक रिपोर्टों, दयालन डी. एवं शांतिलाल नागर जैसे विद्वानों के शोध ग्रंथों तथा डॉ. राजकुमार शर्मा के ऐतिहासिक विवरणों का व्यापक अध्ययन किया गया है।
- **तकनीकी एवं डिजिटल स्रोत:** राष्ट्रीय स्मारक के ई-अभिलेखों और पुरातत्व विभाग की रिपोर्टों और आधिकारिक वेबसाइट से प्राप्त अद्यतन आँकड़ों का विश्लेषण शोध में आधार के रूप में किया गया है।

5.धर्मराजेश्वर मंदिर, मंदसौर–

धर्मराजेस्वर मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले की गरोठ तहसील के धमनार क्षेत्र में आता है। यह स्थान, जिला मुख्यालय मंदसौर से लगभग 106 किलोमीटर की दूरी पर है और सुव्यवस्थित पक्के मार्ग द्वारा गरोठ तहसील से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। यहां पहुंचने के लिए सबसे निकटतम रेल्वे स्टेशन शामगढ़ है, जिससे मंदिर की दूरी 21 किलोमीटर है। यात्रियों की सुविधा के लिए पास के गांव चंदवासा में विश्रामगृह की व्यवस्था है, जो मंदिर से लगभग 3 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। धर्मराजेश्वर स्थित शैलोत्कीर्ण स्थापत्य अद्भुत सुंदरता के कारण लंबे समय से विद्वानों और कला प्रेमियों का ध्यान आकर्षित करता रहा हैं। यहां पहाड़ी पर जहां एक तरफ कलात्मक रूप से उकेरा गया शैलोत्कीर्ण मंदिर है वहीं पहाड़ी के दूसरी ओर बौद्ध परंपरा से जुड़ी कई शैल-गुफाएँ स्थित हैं, जो इस

क्षेत्र को बहुधार्मिक स्थापत्य विरासत का अद्भुत संगम बनाती हैं। धर्मराजेश्वर स्थित मंदिर, चट्टानों को चारो ओर से तराशकर बेहद कुशलता से निर्मित किया गया है।

वर्तमान में यह स्थान "धर्मराजेश्वर" के रूप में प्रसिद्ध है। विद्वानों के अनुसार इसका का प्राचीन नाम संभवतः "धर्मनाथ" रहा होगा। धर्मनाथ" शब्द भगवान विष्णु के नाम के रूप में प्रयुक्त होता है और इसी से "धमनार" नाम की उत्पत्ति मानी जाती है। वहीं "धर्मराजेश्वर" शब्द भी भगवान विष्णु के लिए उपयोग किया गया है।[1]

इससे स्पष्टतः कहा जा सकता हे कि इस पहाड़ी का नाम धर्मनाथ या धर्मराजेश्वर मंदिर के नाम पर ही रखा गया है।

इस स्थल के बारे में सर्वप्रथम कर्नल जेम्स टॉड (पॉलिटिकल एजेंट मेवाड़) द्वारा सन 1821 में अपनी बूंदी से उदयपुर की यात्रा के दौरान जानकारी दी थी। उन्होंने अपनी पुस्तक एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान के तृतीय खंड में इसका वर्णन किया था।[2]

(2)वास्तुविन्यास- धर्मराजेश्वर मंदिर का वास्तुविन्यास सात उपमंदिरों से घिरा हुआ है, जो सभी चट्टान को तराशकर निर्मित किए गए हैं। इनमें चार उपमंदिर प्रांगण के चारों कोनों में तथा तीन उपमंदिर गर्भगृह के तीन भद्र निक्षेपों के समक्ष स्थित हैं। इस प्रकार यह मंदिर सप्त-परिवालय योजना का अनुसरण करता है। मुख्य मंदिर पूर्वाभिमुख है और इसमें द्वारमंडप, सभा-मंडप, अंतराल, गर्भगृह तथा शिखर जैसे प्रमुख स्थापत्य घटक सम्मिलित हैं।[3] इसका आधार पंचरथ संयोजन पर है।

चित्र1: धर्मराजेश्वर मंदिर, मंदसौर

मुखमण्डप- चार अर्ध-स्तम्भों पर आधारित है, जिनका आधार चतुष्कोणीय तथा कुम्भाकार अलंकरणयुक्त है। अग्रभाग पर शूरसेन की मुखाकृति तथा छत पर कमलपुष्प का अलंकरण अंकित है।

मण्डप- गूढ़मण्डप रूप में निर्मित है। इसके मध्य में चार चतुष्कोणीय भद्रक स्तम्भ तथा पार्श्व भित्तियों में कुल 14 भित्ति-स्तम्भ उत्कीर्ण हैं।[4] छत को नौ भागों में विभाजित किया गया है।[5] पृष्ठ भाग में गर्भगृह के समीप दो पार्श्व-द्वार प्रदक्षिणा-पथ की व्यवस्था प्रदान करते हैं। मंडप की योजना कैलाश मंदिर, एलोरा की मंडप योजना से प्रभावित दिखती है।[6]

अंतराल- मण्डप और गर्भगृह के मध्य स्थित है तथा अपेक्षाकृत चौड़ा होकर दोनों भागों को स्पष्ट रूप से विभाजित करता है।[7]

गर्भगृह- आयताकार योजना में निर्मित है। इसके पृष्ठ भाग में वेदी पर काले स्थानक चतुर्भुज विष्णु प्रतिमा स्थापित है। यह प्रतिमा काले बेसाल्ट पत्थर से बनी है। दक्षिणाक्रम से इस प्रतिमा के हाथ में अक्षमाला,गधा, .

चित्र 2: गर्भगृह में स्थापित विष्णु प्रतिमा

चक्र, और शंक धारण किए हैं। शंख पुरुष और चक्र पुरुष को मानवीय रूप में विष्णु के दाएँ और बाएँ क्रमशः त्रिभंग मुद्रा में खड़ा दिखाया गया है। चक्र पुरुष के पास एक पुरुष आकृति है, जो भक्ति भाव में हाथ जोड़कर खड़ा है, जबकि शंख पुरुष के पास एक स्त्री आकृति है, जिसके हाथ में एक खिला हुआ कमल फूल है। यह प्रतिमा परिकर से घिरी हुई है, जिसमें विष्णु के अवतारों को दर्शाया गया है। चंबल नदी में ग्राम बसई से यह प्रतिमा प्राप्त हुई थी। इस विष्णु प्रतिमा को धमनार से चुराने के दो से अधिक बार प्रयास किए

गए किंतु प्रतिमा अपने स्थान से टस से मस न हुई।[8] जबकि मध्य में जलाधारी सहित उत्तरमुखी शिवलिंग प्रतिष्ठित है, जो संभवतः बाद में स्थापित किया गया। यहाँ विष्णु और शिव दोनों की संयुक्त पूजा होती है, जो शैव–वैष्णव समन्वय का द्योतक है, यद्यपि मंदिर मूलतः भगवान विष्णु को समर्पित था।

ऊर्ध्व विन्यास- मंदिर जगती से प्रारम्भ होता है, जिस पर गर्भगृह अधिष्ठान सहित स्थित है। अधिष्ठान पर खुर, कुंभ, कलश और कपोतिका अंकित हैं। जंघा भाग में प्रत्येक मुखभाग पर एक भद्र, दो प्रतिरथ और दो कर्ण निर्मित हैं। भद्र भागों में भद्र रथिकाएँ (वर्तमान में रिक्त) उत्कीर्ण हैं, जबकि प्रतिरथ भागों में अप्सरा या नायिका की द्विभुजी प्रतिमाएँ अंकित हैं। कर्ण भाग की रथिकाओं में आठों दिशाओं के संरक्षक अष्टदिक्पाल दर्शाए गए हैं।

शिखर- गर्भगृह का शिखर लतिना प्रकार का है, जो नागर शैली का वक्ररेखीय एकल शिखर है और नीचे से ऊपर की ओर क्रमशः संकुचित होता जाता है। इसमें मध्य में चौड़ी केंद्रीय लता तथा दोनों ओर चैत्य-मेश अलंकरणयुक्त बाल-पंजराएँ हैं। कर्ण भाग स्कन्द और भूमि आमलक से अलंकृत है तथा इसमें छह भूमियाँ हैं। ग्रीवा के ऊपर एक चौड़ा आमलसारक स्थापित है, जबकि शीर्ष भाग वर्तमान मे भग्न है। शिखर के पूर्वी भाग में शुकनास उत्कीर्ण है।

चित्र3: गर्भगृह के ऊपर निर्मित शिखर

मण्डप का शिखर– मण्डप का शिखर फासनदी प्रकार का है, जो पिरामिडाकार शैली में चार स्तरों में निर्मित है। शीर्ष स्तर सरल है, जिसके ऊपर घंटा, आमलसारक और कलश अलंकरण स्थापित हैं।

चित्र4: मंडप के ऊपर निर्मित शिखर

मुख मण्डप का शिखर– मुखमण्डप के ऊपरी भाग में कपोतवलि बनी है, जिसके मध्य में एक छोटी रथिका में गरुड़ पर विराजमान लक्ष्मीनारायण की लघु प्रतिमा अंकित है।

मंदिर का निर्माण काल- धर्मराजेश्वर मंदिर के निर्माण काल के संबंध में कोई प्रत्यक्ष या अभिलेखीय प्रमाण उपलब्ध नहीं है, जिससे इसे निश्चित रूप से दिनांकित किया जा सके। तथापि प्रवेश द्वार सूरजपोल की देवकुलिका में स्थित भद्रकाली की पादपीठ पर उत्कीर्ण "श्रीभल" अभिलेख के आधार पर जनरल कनिंघम ने इसका काल 8वीं–9वीं शताब्दी माना है। इसके अतिरिक्त स्थापत्य लक्षणों के आधार पर भी इस परिसर का निर्माण 9वीं शताब्दी ईस्वी के उत्तरार्ध में माना जाता है।

6.वासवी शैलोत्कीर्ण मंदिर धार-

वासवी मध्य प्रदेश के धार ज़िले का एक छोटा ग्राम है। स्थानीय जन इस मंदिर को 'मोटामल्ल' के नाम से जानते हैं।[9] यह मंदिर एक पहाड़ी को काटकर निर्मित किया गया है जो बेसाल्ट शैल की बनी हुई है।[10] पहाड़ी के दक्षिण में कारम नदी प्रवाहित होती है, जबकि उत्तरी भाग में चट्टान को काटकर मंदिर शिला को मुख्य पहाड़ी से पृथक किया गया है।

वास्तुयोजना- मंदिर की वास्तुयोजना में मुखमण्डप (मुखचतुष्की), सभामण्डप (गूढ़मण्डप), अन्तराल तथा गर्भगृह जैसे प्रमुख वास्तु अंगों का समन्वय दिखाई देता है। मंदिर का मुख पूर्वाभिमुख है तथा यह मंदिर पंचरथ योजना पर आधारित है।[11]

मंदिर का उत्खनन शिखर के शीर्ष से प्रारंभ कर दीवारों के ऊपरी स्तर तक किया गया , किंतु अज्ञात कारणों से इसे अधूरा छोड़ दिया गया। मंडप का कार्य भी अपूर्ण है

चित्र5: वासवी शैलोत्कीर्ण मंदिर धार (स्रोत: Hindu Temples of India ब्लॉग, साभार)

शिखर- यह मंदिर समचतुरश्र विमान शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसकी अधिरचना छः-स्तरीय फमसाना वितान से निर्मित है।[12] यद्यपि समय के साथ प्राकृतिक अपक्षय के कारण इसका ऊपरी भाग अत्यंत क्षतिग्रस्त हो चुका है, विशेषकर ग्रीवा का एक भाग अब लुप्तप्राय है। शैल की अपक्षयी प्रकृति ने इसकी मूल भव्यता को काफी हानि पहुँचाई है। यदि हम इसके तलों के अनुपातिक माप पर दृष्टि डालें, तो संरचनात्मक भिन्नता स्पष्ट दिखाई देती है:

- **भूमितल :** यह अन्य सभी तलों की तुलना में सर्वाधिक ऊँचा और सुदृढ़ है।

- **द्वितीय ताल:** इसकी ऊँचाई भूमितल से कम, किंतु ऊपरी तलों से कुछ अधिक है।
- **ऊपरी तल:** ऊपर के चार तल लगभग समान ऊँचाई के हैं, जो मंदिर को एक सुव्यवस्थित पिरामिडाकार उभार प्रदान करते हैं। मंदिर के कपोतखंड .

चित्र6: वासवी शैलोत्कीर्ण मंदिर शिखर (स्रोत: Hindu Temples of India ब्लॉग, साभार)

को कूडु मेहराबों से सुसज्जित किया गया है। इन मेहराबों के शीर्ष पर कीर्तिमुख की आकृतियाँ उकेरी गई हैं, जो सुरक्षात्मक और मांगलिक प्रतीक मानी जाती हैं। विशेष रूप से, तृतीय तल के कूडु मेहराबों के भीतर सूक्ष्म नक्काशी की गई है, जिनमें कामुक प्रतिमाओ का अंकन है। खजुराहो के मंदिर में ऐसे दृश्य प्रचुरता में मिलते हैं।[12]

वर्तमान में मंदिर का शीर्ष भाग अपनी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है, जिससे इसके मूल शिखर के स्वरूप का सटीक अनुमान लगाना चुनौतीपूर्ण है। तथापि, उपलब्ध ग्रीवा के अवशेष स्पष्ट रूप से इसकी योजना को वर्गाकार दर्शाते हैं। स्थापत्य के नियमों के अनुसार, चूंकि ग्रीवा वर्गाकार है, अतः यह तर्कसंगत है कि लुप्त हो चुका शिखर भी समचतुरश्र (Square) ही रहा होगा। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस एकाश्म संरचना का शिखर सुरक्षित नहीं रह सका, अन्यथा यह भारतीय विमान स्थापत्य की सबसे अनूठी ऊपरी संरचनाओं में से एक होता।

अंतराल- मंदिर के अंतराल के ठीक ऊपर शुकनास का अत्यंत सटीक संयोजन किया गया है, जो मुख्य विमान के साथ समरसता से जुड़ा है। इस शुकनास के भीतर भगवान शिव की तांडव मुद्रा वाली एक खंडित प्रतिमा उत्कीर्ण है। सूक्ष्म शिल्पकला और ललित मुद्रा में निर्मित नृत्यरत शिव की यह द्विभुज प्रतिमा भारतीय मूर्तिकला की एक अद्वितीय कृति रही होगी प्रतिमा के विन्यास में शिव का बायां हाथ गजहस्त मुद्रा में है, जबकि दाहिने हाथ में वे कोई आयुध या मांगलिक वस्तु धारण किए हुए प्रतीत होते है। विभिन्न आभूषणों से सुसज्जित महादेव के चरणों के निकट एक वाद्य यंत्र (ढोल) बजाते हुए संगीतज्ञ और अन्य गणों या दिव्य आकृतियों का जीवंत अंकन है। विशेष रूप से, शिव के चरणों के मध्य एक लघु आकृति को भी नृत्य की मुद्रा में दर्शाया गया है।[13]

मंडप- अन्तराल के सामने स्थित आयताकार मंडप संभवतः गूढ़मंडप प्रकार का है। इसकी छत के मध्य में एक विशाल पद्मछत्र उत्कीर्ण है, जिसके केंद्र में कलश अंकित है। पद्मछत्र की रक्षा करते हुए चारों दिशाओं में चार बैठे हुए सिंह दर्शाए गए हैं। विशेष रूप से उत्तरी दिशा का सिंह नीचे लेटे हुए हाथी के ऊपर आसिन प्रदर्शित किया गया है। मंडप के सामने आयताकार मुखचतुष्की निर्मित है, जिसकी छत पर पूर्वाभिमुख बैठे हुए हाथी की आकृति उत्कीर्ण है।

बासवी मंदिर के शिल्पकारों, संरक्षकों तथा निर्माण काल के संबंध में कोई निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। निर्माण की तिथि भी प्रत्यक्ष साक्ष्यों के अभाव में निर्धारित नहीं की जा सकती।

7.चतुर्भुज मंदिर-ग्वालियर

ग्वालियर दुर्ग में स्थित चतुर्भुज मंदिर एक प्रमुख विष्णु मंदिर है, जो प्रतिहार कालीन स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह मंदिर किले की ऊँची चट्टान को काटकर निर्मित किया गया है, जिससे इसकी शैलोत्कीर्ण प्रकृति स्पष्ट होती है। इसका निर्माण प्रतिहार शासक मिहिरभोज के शासनकाल में हुआ था। डॉ. हरिबल्लभ माहेश्वरी के अनुसार, मंदिर में उत्कीर्ण दो शिलालेखों की तिथि विक्रम संवत् 932–933 (876–877 ई.) निर्धारित की गई है, जिनसे ज्ञात होता है कि मिहिरभोज के अधिकारी 'अल्ल' ने इसका निर्माण कराया था।[14] प्राचीन समय में इस मंदिर को "वेल्य स्वामिन" के नाम से जाना जाता था। [15]

लक्ष्मण द्वार के समीप स्थित यह मंदिर स्थानीय बलुआ पत्थर पर उत्कीर्ण है और प्रतिहार कालीन शिल्पकला की उत्कृष्टता को दर्शाता है। शिलालेखों में प्रयुक्त "एकशिले" तथा "तंकोत्कीर्ण" जैसे शब्द इसकी शैलोत्कीर्ण विशेषता की पुष्टि करते हैं। गर्भगृह के प्रवेश द्वार के ललाटबिम्ब पर अंकित गरुड़ आकृति इसे विष्णु से संबद्ध करती है। मंदिर के आन्तरिक एवं बाह्य भाग में अर्थात् सम्पूर्ण मंदिर पर विष्णु की विभिन्न अवतार प्रतिमाएं प्रदर्शित होने के कारण इसे विष्णु को समर्पित मंदिर माना गया है।[16] साथ ही, गर्भगृह में स्थापित चतुर्भुज विष्णु प्रतिमा के कारण यह मंदिर "चतुर्भुज मंदिर" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। [17]

वास्तुविन्यास- मंदिर पूर्वाभिमुख है तथा इसमें आयताकार गर्भगृह के आगे एक चतुर्भुज मुखमण्डप निर्मित है, जिसमें अग्रभाग में दो स्तंभ और पीछे दो अर्धस्तंभ हैं। इसमें अंतराल का पृथक प्रावधान नहीं है। मंदिर को निम्न जगती पर निर्मित किया गया है और इसका शिखर नागर शैली के लाटिना प्रकार का है, जो पंचरथ योजना पर आधारित है।[18] मंदिर के तीन ओर संकीर्ण प्रदक्षिणा-पथ काटा गया है, यद्यपि स्थापत्य की दृष्टि से यह निरंधार है। मंदिर के वेदीबन्ध को खुर, कुम्भ, कलश और कपोतालि जैसे पारंपरिक तत्वों से सजाया गया है। इसके भद्र, प्रतिभद्र और कर्ण भागों पर छोटी-छोटी रथिकाएँ बनाई गई हैं, जिनमें विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। वेदीबन्ध का भद्र भाग विशेष महत्व रखता है। उत्तरी दिशा में पंचाग्नि तप करती हुई. चतुर्भुजी पार्वती की प्रतिमा, पश्चिम दिशा में द्विभुजी कार्तिकेय तथा दक्षिण दिशा में नृत्य मुद्रा में गणेश की सुंदर आकृति अंकित है। इसके अलावा प्रतिभद्र और कर्ण भागों पर भी विभिन्न गण-देवताओं की छोटी आकृतियाँ उकेरी गई हैं, हालांकि उनकी स्पष्ट पहचान करना कठिन है।

चित्र7: चतुर्भुज मंदिर ग्वालियर

जंघा भाग पंचरथ योजना पर आधारित है, जिसमें भद्र, प्रतिरथ और कर्ण का संतुलित संयोजन देखने को मिलता है। भद्र और कर्ण भागों को देवमूर्तियों से युक्त रथिकाओं से सजाया गया है। जंघा के भद्र भागों में वैष्णव परंपरा से संबंधित प्रमुख मूर्तियाँ स्थापित हैं—उत्तर में त्रिविक्रम, पश्चिम में विष्णु और दक्षिण में नृवराह की प्रतिमाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।[19]

शिखर- मंदिर का मूल शिखर पंचस्थ योजना पर आधारित था, किंतु वर्तमान में उसका केवल निचला भाग तीन भूमियों तक सुरक्षित है तथा ऊपरी भाग का पुनर्निर्माण बाद में किया गया है। प्रतिहार कालीन परंपरा के अनुसार शिखर के अग्रभाग पर शुकनासिका निर्मित थी, जिसमें विष्णु की चतुर्भुजी आसनस्थ प्रतिमा अंकित है, जो अब क्षतिग्रस्त अवस्था में है। प्रतिहार शैली के मन्दिरों में अन्तराल के ऊपर शिखर के साथ ऐसी शुकनास निर्मित करने की परम्परा थी।।[20]

मंडप- मुखमण्डप की छत आंशिक रूप से पिरामिडाकार है, जिसमें क्रमशः छोटे होते तीन स्तर दिखाई देते हैं, जबकि वितान समतल है और चारों कोनों पर लघु-शिखर निर्मित हैं। मुखमण्डप की समतल छत के नीचे द्वार के ऊपर ललाटबिम्ब पर प्रतिहार शासक श्रीमद् आदिवराह (भोज) के काल का एक महत्वपूर्ण शिलालेख उत्कीर्ण है, जिसकी तिथि संवत् 932 (ई. 875) है। मंडप की धरणी पर कृष्णलीला के विभिन्न प्रसंग—पूतना वध, चारूण वध, कंस वध, गोवर्धन धारण करते कृष्ण तथा दही मथती यशोदा और बालकृष्ण अत्यंत सुंदरता से उकेरे गए हैं।

गर्भगृह- गर्भगृह आयताकार है, जिसमें संगमरमर की चतुर्भुजी विष्णु प्रतिमा स्थापित है, जो वर्तमान में आंशिक रूप से खंडित है। बाह्य भित्तियों पर अष्टदिक्पालों का अंकन उनकी निर्धारित दिशाओं में किया गया है। मंदिर का प्रवेश द्वार बहुस्तरीय द्वार-शाखाओं और समृद्ध अलंकरण से युक्त है, जिसके द्वार-जंघाओं के निचले भाग में बाईं ओर गंगा तथा दाईं ओर यमुना नदी-देवियों का अंकन किया गया है। मंदिर की अंतर्भित्ति पर देवनागरी लिपि में संस्कृत भाषा के दो शिलालेख प्राप्त होते हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि इस मंदिर का निर्माण ग्वालियर दुर्ग के प्रतिहार कालीन कोटपाल वल्लभट्ट स्वामी के पुत्र अल्ल द्वारा कराया गया था।

चित्र8: गर्भगृह स्थित संगमरमर की चतुर्भुजी विष्णु प्रतिमा

निष्कर्ष- धर्मराजेश्वर मंदिर का निर्माण एक खाई के भीतर किया गया है, जिसके कारण यह बाहर से सहज रूप में दिखाई नहीं देता। इसके विपरीत, चतुर्भुज और वासवी मंदिरों का निर्माण बाहरी चट्टानों पर किया गया है, जिससे वे दूर से ही स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। इस प्रकार, तीनों मंदिरों के निर्माण में स्थल-चयन की दृष्टि से स्पष्ट भिन्नता देखने को मिलती है।

स्थापत्य की दृष्टि से धर्मराजेश्वर मंदिर पूर्ण विकसित रूप का प्रतिनिधित्व करता है। इसके गर्भगृह में विष्णु प्रतिमा और शिवलिंग दोनों की उपस्थिति धार्मिक सहिष्णुता तथा शैव-वैष्णव समन्वय का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती है। दूसरी ओर, वासवी मंदिर अपूर्ण है, फिर भी इसकी विशिष्टता इस बात में निहित है कि इसमें एलोरा के शैलोत्कीर्ण मंदिर का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। वहीं ग्वालियर स्थित चतुर्भुज मंदिर प्रतिहारकालीन स्थापत्य एवं मूर्तिकला का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है, जो उस समय की कलात्मक परिपक्वता को दर्शाता है।

निर्माण सामग्री के संदर्भ में भी इन मंदिरों में विविधता पाई जाती है। शिल्पकारों ने स्थानीय शिलाओं का उपयोग करते हुए धर्मराजेश्वर मंदिर को लेटराइट चट्टान से, वासवी मंदिर को बेसाल्ट शिला से तथा चतुर्भुज मंदिर को बलुआ पत्थर से निर्मित किया। यह चयन न केवल स्थानीय उपलब्धता को दर्शाता है, बल्कि मंदिर की संरचनात्मक विशेषताओं को भी प्रभावित करता है।

समग्रतः, इन तीनों मंदिरों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मध्य प्रदेश की शैलोत्कीर्ण वास्तुकला ने स्थानीय परंपराओं के साथ-साथ उत्तर भारतीय नागर शैली तथा दक्कन की मंदिर परंपरा के तत्वों को भी आत्मसात किया। इस प्रकार, ये मंदिर न केवल स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक एवं धार्मिक समन्वय की भावना को समझने के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत सिद्ध होते हैं।

संदर्भ सूची-

1) पाण्डेय, कैलाश चंद्र, दिव्य दशपुर, जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद, मंदसौर, 2022, पृष्ठ (65)
2) टोड, जेम्स, एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ़ राजस्थान ,रोडलेज और केगन पॉल लिमिटेड ब्रॉडवे हाउस, लंदन, खंड-2, 1914, पृष्ट (577)
3) वर्मा, मनोज, पश्चिमी मालवा का मंदिर स्थापत्य एवं उसका सांस्कृतिक अध्ययन, शोध ग्रन्थ, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, 2009, पृष्ठ (80)
4) दयालन. डी, मोनोलिथिक टेम्पल्स ऑफ़ मध्य प्रदेश, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली ,प्रथम खंड 1995,पृष्ठ. (64)
5) त्रिवेदी, चंद्र भूषण, दशपुर, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, द्वितीय संस्करण, 2009, पृष्ठ (93)
6) त्रिवेदी, चंद्र भूषण, दशपुर, पूर्वोक्त, पृष्ठ (92)

7) कनिंघम, एलेक्जेंडर, जनरल आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया रिपोर्ट,1864-65 पृष्ठ. (278)

8) दयालन,डी, मोनोलिथिक टेंपल ऑफ़ मध्य प्रदेश ,पूर्वोक्त पृष्ठ .(66)

9) सिसोदिया, शान्तिदेव, अविभाजित मध्य प्रदेश में शैलोत्कीर्ण स्थापत्य एवं कला एवं स्थापत्य (प्रारंभ से नवीं शती. ई तक), शोध ग्रंथ, जीवाजी विश्वविद्याल ग्वालियर, 2007, पृष्ठ (223)

10) दयालन,डी, मोनोलिथिक टेंपल ऑफ़ मध्य प्रदेश ,पूर्वोक्त पृष्ठ (20)

11) सिसोदिया, शान्तिदेव, अविभाजित मध्य प्रदेश में शैलोत्कीर्ण स्थापत्य एवं कला एवं स्थापत्य (प्रारंभ से नवीं शती. ई तक), शोध ग्रंथ, पूर्वोक्त पृष्ठ.(223)

12) दयालन,डी, मोनोलिथिक टेंपल ऑफ़ मध्य प्रदेश ,पूर्वोक्त पृष्ठ (21)

13) दयालन,डी, मोनोलिथिक टेंपल ऑफ़ मध्य प्रदेश ,पूर्वोक्त पृष्ठ (24)

14) दयालन,डी, मोनोलिथिक टेंपल ऑफ़ मध्य प्रदेश ,पूर्वोक्त पृष्ठ. (23)

15) डॉ. शर्मा राजकुमार 'मध्य प्रदेश का इतिहास, खण्ड-1, प्राचीन काल' मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2014 पृ.-408

16) मदुरिया, पिंकी, गुर्जर प्रतिहार कालीन ग्वालियर का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन (750 ई. से 1018 ई. तक), शोध ग्रंथ, जीवाजी विश्वविद्याल ग्वालियर, 2021 पृष्ठ (104)

17) कृष्णदेव टेम्पल्स ऑफ नॉर्थ इण्डिया. दिल्ली, 1969, पृ. 27

18) सिंह,अमर, ग्वालियर दुर्ग, मंदिर एवं मूर्तियां, तरुण प्रकाशन, लखनऊ, 1996, पृष्ठ (62)

19) जैन, मीना, ग्वालियर नगर के प्राचीनतम मंदिर एक कलात्मक अध्ययन,शोध ग्रंथ, 2021, पृष्ठ (56)

20) सिंह,अमर, ग्वालियर दुर्ग, मंदिर एवं मूर्तियां, पूर्वोक्त, पृष्ठ (63)

21) सिंह,अमर, ग्वालियर दुर्ग, मंदिर एवं मूर्तियां, पूर्वोक्त पृष्ठ (64)